डण्डा कट्टना गहि ओरे खीरी (भेलवा फारी शुरूआत का कहानी)

बिशु उरांव

शोधार्थी
स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यायल, राँची

यह कहानी पूर्वजों क द्वारा बताई हुई है। जिस समय पूरे संसार में पाप भर गया और धर्म नष्ट हो गया। इसी समय महादेव और पर्वती दोनों सोचते है पृथ्वी पर तो पाप भर गया अब क्या किया जाये। पर्वती द्वारा महादेव को सलाह दी जाती है कि कटोरा से आग का बरिश करके आधा दुनियाँ को जला दे। पर्वती की बात को सुनकर महादेव जी कटोरा के स्थान पर थाली से आग को बरसा देते। आग का बरिश करने से पहले हनुमान जी को बोला– हे भगिना देखना मैं आग का बरिश करूगा तो पूरा संसार न जल जाये। और मुझे इशारे के रूप में नगाड़ा बजा देना। यह कह कर महादेव ने आग का बरिश शुरू कर दिया और आग से पूरे संसार जलने लगते है। हनुमान पके हुए तेला फल को खाने में मस्त हो गया। आग से उसका बाल जल गया यह देखकर वह अपने हाथों से आँखों को चेहरा को पोछ दिया जिससे पूरा चेहरा काला हो गया। आग से पूरा संसार का जीव–जन्तु, पेड़–पौधा, सभी वस्तु जल कर राख हो गया। पूरा संसार को जलते देखकर पार्वती चिन्ता में पड़ गई और महादेव को कहने लगी आधा संसार को प्रलय से खत्म करने के लिए कही तो पूरा संसार को जला दिये। मानव जाति को बचाने के लिए वह उपाय सोचने लगी उसी समय उसे भाई–बहन के उपर नजर पड़ी। दोनों को वह ''सिरा–सिता नाल'' के केकड़ा का बिल में छुपा देती है। महादेव जी से कहती है कि मानव जाति पूरे संसार में खत्म हो गये है। आधा प्रलय लाने के लिए कहीं थी पर आप ने पूरा प्रलय ला कर पूरे संसार में सभी जीव–जन्तुओं का अस्थित्व को मिटा दिये। कहीं पर भी कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। पर्वती बोलती है पृथ्वी पर जा कर मानव जाति की खोजकर उसका अस्थित्व को मिटने से बचाने के लिए आग्रह करती है। इस पर महादेव जी पूरे संसार का भ्रमण कर वपास लौटते है और खाली हाथ आते है। इस पर उसको अच्छा खाना नहीं देती है। एक दिन महादेव अपने लिली भूलि बण्डा कुत्ता के साथ ''सिरा–सिता नाल'' की ओर घुमने निकले। कुती आगे–आगे जा रही थी और उसके पीछे महादेव। कुत्ता को मनुष्य जाति का गन्ध को सुघकर भोकने लगती है साथ ही उस ओर दौड़ने लगती है।

वे बच्चे लोग धूप सेकने के लिए बाहर निकले हुए थे। कुत्ता को देखकर वे दोनों बिल में घुसने की कोशिश करने लगते है इस पर महादेव जी ने रूकने के लिए कहते है। मत डरो मैं तुम्ही लोगों को खोजने के लिए आया हूँ। यह सुनकर दोनों बच्चे रूक जाते है। महादेव जी दोनों बच्चों को उठाकर पर्वती के पास ले आते है। सभी को पर्वती स्वादिष्ट खाना खिलाती है। महादेव पर्वती से कहते है प्रलय से तो संसार का हर वस्तु जल कर राख हो गया पर ये दोनों कैसे बच गये।? इस पर पर्वती पूरी कहानी बता देती है।

अब ये दोनों बच्चें महादेव और पर्वती की देख–रेख में बढ़ने लगते है। महादेव ने उन लोगों के साथ रिश्ता में दादा–दादी के रूप में बताया। दोनों भाई–बहन के रूप में रहते थे। दोनों बड़ा होने लगे उन दोनों यह पता नहीं था कि जीवन कैसे जिया जाता है। कुछ बड़े होने पर महादेव ने एक लकड़ी का लाठी को सोने के जगह में रख देते है और दोनों को इस और उस पार सोने के लिए कहते है। वे लोग वैसे ही करते हुए दिन बिता रहे थे। एक दिन पर्वती सोचती है। और महादेव जी से कहती है इस तरह से तो मानव जाति का वृद्धि नहीं होगी। इस पर महादेव जी एक दिन चुपचाप जाकर लाठी को हटा देते है लाठी हाट जाने पर दोनों एक हो जाते है जिसके कारण लड़की गर्भवती हो जाती है। इन्ही के बाल–बच्चे पूरे संसार में फैल जाते है।

अब मानव जाति की संख्या बढ़ने लगती है। जीवन जीने के लिए महादेव खेत दिखाते है और कहते है जाओ कद्दू लगाने के लिए पिण्ड बनाओ। इसके बाद महादेव देखने जाते है और पूछते है इस पिण्ड को कब बनाया पोता? इस पर पोता बोलता है आज। दूसरे दिन जाकर फिर पूछ? फिर पोता बोला आज। रोज पूछने पर आज का ही जबाब देता था। इस पर महादेव जी ने दिन–रात बनाने की सोची और दिन–रात बना दिया। और फिर जाकर पूछा? इस पर पोता आज, पिछले, उससे पिछले दिन का जबाब देता है। इस पर महादेव ने सातो दिन का नामकरण कर दिया।

पिण्ड तैयार होने के बाद महादेव जी ने कद्द का बीज लगाने के लिए दिया। कद्दू उग गया और थोड़े ही दिन में लहलहाने लगा। खूब फल दिया और पक गया। पका हुआ कद्दू को फोड़ने के लिए कहा। फोड़ने पर बारहो–बिरही किस्म के बीज निकला। महादेव जी उसी बीज से खेती करने लगे। महादेव जी का दिया हुआ बीज से खेती भरपूर होने लगा और वे महादेव और पर्वती को भूलने लगते है।

महादेव और पर्वती सोचने लगते है कि इस तरह से तो ये लोग हमें भूल जाऐंगे। इन लोगों को कुछ दुख देना चाहिए जिससें याद रखेंगे। यह सोचकर महादेव उनके लगाये हुए रोपा खेत में रोग का प्रकोप छोड़ देते है जिससें रोपा खेत बाकी रोग से बरबाद होने लगता है। इस पर पोता दादा के पास जाकर कारण पूछता है कि क्यों रोग लग रहा है। यह सुनकर महादेव जी जाकर देखते है धान खेत में सचमुच में रोग लगा है। वह इस रोग के लिए दवाई के लिए उपाय बातलाते है। वह अपने पोता से कहा अरवा चावल कूटना और उसे भींगा देना भींग जाएगा तो जड़ी–बूटी को डालकर मिला देना। सभी समाग्री मिल जाएगा तो छोटा–छोटा टुकड़ा बनाकर पुआल उपर में रख देना और उसके उपर भी पुआल से ढक देना। जब दवाई तैयार हो जाएगा तो आकर बताना। बन जाने के बाद पोता ने इसकी सूचना दादा को दी। इस पर महादेव जी ने अपने पोता को बताया कि करहनी चावल का हड़िया बनाओं और पक जाएगा तो बताना। हड़िया पका तो बता दिया अब महादेव ''डंण्डा कट्टना'' का पूजा शुरू करने के लिए पूजा स्थल को गोबर से लिपाई करने के लिए कहता है। और घर के लोग सभी पूजा समाग्री देते है। पूरब की ओर मुह कर महादेव जी ने पूजा की उसके बाद से धान रोपा खेती पुनः हरा–भरा हो जाता है। उसी समय से उराँव लोग महादेव जी के बताये हुए अनुसार पीढ़ी दर पीढ़ी करते चले आ रहे है।

यह पूजा हर समय होता है जैसे अच्छा जीवन के लिए जन्म, मृत्यु, शादी, धान खेती, खेत के लिए बीज निकालने, नया घर, शुरू करने से पहले, नया घर घुसने के लिए, नया कुआ खोदने के लिए, खेती–बरी होने के बाद, खेत से धान घुसने के बाद, और पर्व त्योहार में, ''डंण्डा कट्टना'' किया जाता है। यह घर–घर में और सामुहिक रूप में भी किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

कत्थअइन अरा कत्थटूड़
उराँव–सरना धर्म और संस्कृति
सरना फूल